Research Report Brief 2

MANAGE- Centre for Agricultural Extension Innovations, Reforms and Agripreneurship

January, 2018

कृषि विस्तार और परामर्श सेवाओं के अंतर्गत लिंग और पोषण को एकीकृत करना

सतरूपा मोदक, सुचिरदीप्ता भट्टाचार्जी तथा सरवणन राज

परिचय: अधिकांश विकासशील देशों में लिंग भेदभाव ग्रामीण समुदाय में गहराई तक व्याप्त है, जिसका परिणाम भूमि अधिकारों और निर्णय लेने की शक्ति की कमी, कुपोषण, शिशु मृत्यु दर और गरीबी है और इस दुष्चक्र में महिलाएं फंस जाती हैं। चूंकि महिलाओं और पुरुषों की उत्पादन प्राथमिकताएं अक्सर अलग-अलग होती हैं और उन्हे विभिन्न उत्पादन और विपणन बाधाओं का सामना करना पड़ता है अत: ग्रामीण परामर्श सेवाओं को समुदाय के भीतर लैंगिक भूमिकाओं के अनुरूप अनुकूलित किया जाना चाहिए। एक अन्य विशाल मुद्दा जो समाज के भीतर मौजूद है- ग्रामीण और शहरी - दीर्घकालिक भूख और गरीबी है जो कई विकासशील देशों में कुपोषण या अल्प पोषण का कारण है। जबकि, नीति निर्माताओं का ध्यान उत्पादकता में वृद्धि से गरीबी और कुपोषण को कम करने की ओर हट गया है। जागरूकता, परामर्श सेवाओं, पोषाहार शिक्षा, खराब आहार सेवन, सामाजिक मान्यताओं और रीति-रिवाजों की कमी के कारण कुपोषण को कम करना अभी तक संभव नही हो सका है।

Fig। 1: Tailoring school- Non farm activity

चित्र-1 सिलाई स्कूल गैर कृषि गतिविधि

जब लिंग और पोषण का विस्तार सेवाओं - अपर्याप्त संसाधनों, मानव और वित्तीय दोनों, लिंग-पोषण केंद्रित गतिविधियों को समर्पण; संवादहीनता; और बहु कार्यसूची में एकजुट करने की बात आती है तो कृषि विस्तार प्रणाली की अपनी समस्याओं का संग्रह उत्पन्न हो जाता है। उपरोक्त परिदृश्य का दृष्टिकोण (1) दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में कृषि विस्तार गतिविधियों के संग्रह के तहत पोषण और लिंग की स्थिति को समझने (2) भारत में कृषि विस्तार गतिविधियों में लिंग और पोषण को ध्यान में रखते हुए विभिन्न संगठनों द्वारा अपनाए गए विस्तारवादी दृष्टिकोणों का पता लगाने और (3) वर्तमान कृषि विस्तार सेवाओं द्वारा सामना की जा रही गंभीर चुनौतियों के विश्लेषण तथा इन सेवाओं को मजबूत करने के अवसरों के अध्ययन पर ध्यान केंद्रित करना है।

कार्यप्रणाली और अनुसंधान डिजाइन: भारत और दुनिया भर में कृषि विस्तार प्रणाली में लिंग और पोषण दोनों को एकीकृत करने की दिशा में काम करने वाले प्रमुख भागीदारों का पहचान करना और उनका पता लगाना, कृषि, पहचान करने के बाद, सहायक स्रोतों तथा पोषण और लिंग के विशेषज्ञों के साथ अनौपचारिक बातचीत करके, जिसमें सरकार तथा अनुसंधान / शिक्षा जगत के प्रतिनिधि शामिल हों, जिन्हे कृषि, पोषण और लिंग में अलग-अलग स्तर की विशेषज्ञता प्रप्त हो द्वारा समीक्षा की जानी चाहिए।

आईसीएआर- महिला केंद्रीय कृषि संस्थान भुवनेश्वर, राष्ट्रीय पोषण संस्थान (हैदराबाद), अर्ध-शुष्क उष्णकटिबंधीय अंतर्राष्ट्रीय फसल अनुसंधान संस्थान (हैदराबाद) को लिंग, पोषण पर कार्य करने तथा कृषि विस्तार के साथ एकजुटता के लिए प्रमुख हितधारकों के रूप में पहचाना गया था। डेटा संग्रह के लिए साहित्य और स्नोबॉल नमूना तकनीक की व्यवस्थित समीक्षा का उपयोग किया गया था।

चित्र-2 पोषण व्यंजनों को तैयार

दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में कृषि विस्तार गतिविधियों के संग्रह के हिस्से के रूप में पोषण और लिंग की स्थिति

क्र।सं।	विवरण	व्याख्या
1।	बाग्लादेश, इथोपिया, पेरू तथा भारत	राष्ट्रीय लिंग समानता योजना के उद्देश्य के साथ कृषि नीतियों में ग्रामीण महिलाओं की जनसंख्या को लक्ष्य करना है जिसमें आटकम और आटपुट स्तर पर लिंग संकेतक शामिल हैं।
2।	ब्राज़िल	सभी वर्तमान खाद्य पदार्थों और कृषि नीतियों में पोषण-संवेदनशील कृषि शामिल है तथाऐसी योजनाएं जो परिवारिक कृषि मॉडल को बढ़ावा देने से संबंधित हैं विशेष रूप से पोषण के प्रति संवेदनशील हैं।
3।	सियरा लिओन	अधिकांश कृषि उत्पादन में महिलाएं भाग लेती हैं, लेकिन उनके पास विपणन और अन्य उत्पादन संबंधी संबंधी मुद्दों के लिए कोई भूमि अधिकार या निर्णय लेने की शक्ति नहीं होती है।
4।	सेनेगल	पोषण संवेदनशीलता कृषि नीति दस्तावेजों में एकीकृत है, लेकिन व्यापक स्तर पर नहीं।
5।	मलावी	राष्ट्रीय नीतियां विविधतापूर्ण उत्पादन का संकेत देती हैं, विशेष रूप से फलिदार(लेग्यूमिनस) फसलों की। स्वदेशी फसलों के उपयोग का ज्ञान और नए अभ्यास, पाक कला और उपक्रम स्थानीय स्तर पर मौजूद हैं, जो पोषण-संवेदनशील कृषि में योगदान कर सकते हैं। उन्हे बढ़ावा देने की आवश्यकता है।
6।	मोजाम्बिक	मुख्य चुनौती आहार विविधता और व्यापक रणनीतिक दस्तावेजों की कमी का अपर्याप्त प्रचार है।
7।	नेपाल	बच्चों में कुपोषण की रोकथाम, गरीबी कम करते हुए खाद्यान में सुधार और पोषण की सुरक्षा, कृषि व्यापार अधिशेष और ग्रामीण परिवारों के लिए उच्च आय तथा कृषि आधारित आजीविका में सतत सुधार के लिए राष्ट्रीय योजना आयोग ने प्रमुख योजनाएँ विकसित की हैं।

कृषि विस्तार और परामर्श सेवाओं में लिंग और पोषण को एकीकृत करने हेतु अनुमोदन: देश भर में अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (एऐआसीआरपी) के गृह विज्ञान पर 14 केंद्र हैं, प्रत्येक केंद्र स्थानीय समस्याओं की पहचान करने तथा श्रम को कम करने वाले उपकरणों और प्रौद्योगिकी को विकसित करने में शामिल है। विशेष रूप से महिलाओं के लिए श्रम को कम करने वाले उपलब्ध उपकरणों के साथ कस्टम हायरिंग केंद्रों को कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके) के हस्तक्षेप से परियोजना गांवों में स्थापित किया गया था। गृह विज्ञान पर एआईसीआरपी ने खेती करने वाली महिलाओं को गैर-कृषि गतिविधियों जैसे सुरक्षात्मक कपड़े/एप्रन, हाथ के दस्ताने, फूलों और पत्तियों के अर्क(रस) से प्राकृतिक डाई तथा रंगों को विकसित करने लिए भी प्रोत्साहित किया। महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण के लिए सिलाई, कढ़ाई, खाद्य प्रसंस्करण अर्थात जैम, जेली, अचार, कैंडी, जूस बनाने पर भी प्रशिक्षण दिया गया।

गाँव गोद लेने के कार्यक्रम के तहत क्रिडा ने जैव-फोर्टीफाइड फसलों को उगाने का परीक्षण किया। एग्रोनॉमिक प्रथाओं द्वारा जैव-फोर्टीफिकेशन ग्रामीण समुदाय के लिए सहायक हो सकते हैं तथा ये शहरी सुपरमार्केट में उपलब्ध फोर्टीफाइड खाद्य पदार्थों के लागत प्रभावी और सस्ते स्रोत हैं। भारतीय आबादी के दैनिक आहार के हिस्से के रूप में पोषक तत्वों से भरपूर भोजन की खपत सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न किस्मों के चावल की फसलों को आनुवंशिक रूप से संशोधित करने के लिए अनुसंधान किया जा रहा है। खाद्य और पोषण बोर्ड, तेलंगाना की क्षेत्र इकाइयाँ शिशुओं और प्री-स्कूली बच्चों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए स्थानीय स्तर पर उपलब्ध भोजन से कम लागत वाले पौष्टिक व्यंजनों का विकास कर रही हैं और इन्हे प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों तथा पोषण शिक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से प्रचार-प्रसार कर रही हैं। अर्ध-शुष्क उष्णकटिबंधीय अंतर्राष्ट्रीय फसल अनुसंधान संस्थान (इंटरनेशनल क्रॉप रिसर्च इंस्टीट्यूट फॉर सेमी-एरिड ट्रॉपिक्स) ने विपणन की मान्यता के साथ एक मांग पूल बनाकर उद्यमियों को सहारा देने के लिए कृषि-नवोन्मेष प्लेटफॉर्म विकसित किया है। आयोडीन और आयरन से समृद्ध डबल फोर्टिफाइड नमक राष्ट्रीय पोषण संस्थान(एनआईएन), हैदराबाद द्वारा विकसित एक कम लागत वाली तकनीक है क्योंकि इसकी सामग्री आसानी से उपलब्ध है और इस फोर्टिफाइड नमक का सेवन दो प्रकार की पोषक तत्वों की कमी से संरक्षा सुनिश्चित कर सकता है। एनआईएन प्रिंट मीडिया जैसे पोस्टरों, लीफलेटों, लोकगीतों, जिंगल और नाटकों, नुक्कड़ नाटकों, कठपुतली शो, बुर्रकथा और पोषण खेलों की मदद से जनता के प्रचलित समूह के बीच उचित आहार संबंधी दिशानिर्देश के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए विभिन्न विस्तार विधियों का उपयोग कर रही थी। खाद्य और पोषण बोर्ड, तेलंगाना और केंद्रीय बरानी कृषि अनुसंधान संस्थान का कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके) पोषण संबंधी विषयों के साथ-साथ विभिन्न पोषक तत्वों से समृद्ध भोजन के नमूनों तथा पोषण के मुद्दों पर व्याख्यान पर प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, चित्रकला आदि का आयोजन करके लोगों को भोजन और पोषण संबंधी मुद्दों, बाजरा आदि के बारे में जागरूकता पैदा करने के मकसद से विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करते हैं। ये आयोजन ग्रामीण जनता, आईसीडीएस पदाधिकारियों, आंगनवाड़ी शिक्षकों आदि में जागरूकता पैदा करने और उन्हे संवेदनशील बनाने में मदद करते हैं।

हितैषी उपकरणों और पोषण खाद्य व्यंजनों के विधि प्रदर्शन, मल्टी-ग्रेन आटा, फसल कटाई के बाद की प्रौद्योगिकी, खाद्य संरक्षण तकनीक, किचन बागवानी, पोषण की कमी पर परिणाम प्रदर्शन, कुपोषण विष मता, पोषक तत्वों की सुरक्षा, मूल्यवर्धन और सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी पर जनता को शिक्षित करने के लिए घर ले जाने वाली सामग्रियों के बारे में शिक्षित करने के लिए विभिन्न परियोजना ठिकानों पर अनावरण दौरा(एक्सपोज़र विजिट) करा रहा था। विशेष रूप

Fig. 3: Awarenessaboutnutrationissuesthrough flash cards-NIN initiative

से जमीनी स्तर पर काम करने वाले प्रचार-प्रसार कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों को पोषण और लिंग गतिविधियों के बारे में ज्ञान देने के लिए प्रशिक्षण एक मुख्य घटक था। देशी मुर्गियों और बतख की किस्मों के साथ मुर्गी पालन को भी आय सृजन और घर में दैनिक पोषण के लिए प्रोत्साहित किया गया था। बहु-एजेंसी दृष्टिकोण के तहत, वैज्ञानिक ने अपनी अनुसंधान कार्यावधि के दौरान समुदाय के भीतर एक पेशेवर पुरुष पैरा-प्रचारक और एक पेशेवर महिला पैरा-प्रचारक की नियुक्ती की तथा विभिन्न गतिविधियों को करने के लिए आवश्यक वित्तीय सहायता भी प्रदान की।

विभिन्न संगठनों द्वारा पहचान की गई समस्याएं।

1. परिवारों के बुजुर्ग सदस्यों द्वारा किशोरावस्था की लड़कियों, गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाओं के आहार के बारे में मिथक।

चित्र-4 सीड ड्रिल प्लांटर का प्रदर्शन

2. केवल गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाओं को शिक्षित करने के लिए ही हस्तक्षेप किया जाता है परंतु घर के मालिक या बुजुर्ग सदस्यों के बीच जागरूकता पैदा करने के लिए कोई पहल नहीं की जाती है।
3. लक्षित लाभार्थी अर्थात महिलाओं की कम भागीदारी क्योंकि परिवार के संसाधनों जैसे भोजन और प्रबंधन पर निर्णय घर के मुखिया या बुजुर्ग सदस्य द्वारा लिया जाता है।
4. माँ के खराब स्वास्थ्य के परिणामस्वरूप कुपोषित बच्चे का जन्म होता है।
5. आंगनवाड़ी कार्यकर्ता प्रचारचक के काम के लिए अच्छे हैं परंतु आंगनवाड़ी और एक्सिलरी नर्स मिडवाइफ (एएनएम) के बीच कोई समन्वय न होने से यह संभव नही है।
6. महिलाओं को कोई भूमि अधिकार नहीं है, अत: कोई निर्णय लेने की शक्ति व क्रय शक्ति न होने के कारण अक्सर लैंगिक भेदभाव का कारण बनती हैं।
7. अधिकांश डेयरी प्रबंधन कार्य महिलाओं द्वारा की जाती हैं परंतु पशु उत्पादों के विपणन के बारे में निर्णय लेने का उन्हे कोई अधिकार नहीं है।
8. यह देखा गया है कि गरीबी के कारण पुरुष नौकरी की तलाश में शहरों की ओर पलायन करते हैं परंतु महिलाएं केवल फसल उत्पादन कार्यों को संभालती हैं लेकिन महिला किसानों के लिए नीतियां और कार्यक्रम कम हैं।
9. गांव में बैठकों के दौरान महिलाओं के लिए अनुपयुक्त बैठक का समय अपनाया जाता है।

अनुशंसाएँ:

1. कुपोषण को रोकने के लिए समूह या व्यक्तिगत पहुंच के बजाय पारिवारिक पहुंच की आवश्यकता है।
2. प्रत्येक घर और स्कूल में विभिन्न स्थानीय खाद्य पदार्थों के पोषक तत्वों के मूल्यों की जानकारी को शामिल हुए पोषण उद्यान विकसित करने के लिए और अधिक प्रयास किए जाने चाहिए।

चित्र-5 आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं का लिंग और पोषण संवेदनशीलता पर कार्यशाला

3. ग्राम स्तर के कई महिला और पुरुष कार्यकर्ताओं (वीएलडब्ल्यू) को लिंग और पोषण के दृष्टिकोण से संवेदनशील बनाया जाना चाहिए।
4. महिलाओं की बैठकों के लिए उपयुक्त समय और स्थल का चयन।
5. परिवार के पुरुष सदस्यों का समर्थन प्राप्त करने की आवश्यकता है क्योंकि वे अक्सर महिलाओं की सामाजिक गतिशीलता के बारे में निर्णय लेते हैं। बेहतर समझ और कार्यान्वयन के लिए पोषण और लिंग संबंधी बैठकों में शामिल होने के लिए उन्हे आश्वस्त किया जा सकता है।
6. पहुंच आवश्यकता और समस्या आधारित होनी चाहिए तथा विशेष क्षेत्र के स्थितिजन्य कारकों के बारे में हमदर्दी पैदा करने का प्रयास करना चाहिए।
7. लाभार्थी के उपयुक्त समूह का चयन - अन्यथा गलत चयन का परिणाम अक्सर शून्य होता है।

सतरूपा मोदक, उत्तर बंग कृषि विश्व विद्यालय, पश्चिम बंगाल में मेनेज के एक इंटर्न और पीएचडी रिसर्च स्कॉलर हैं। (satarupamodak0@gmail।com)

सुचिरदीप्त भट्टाचार्जी, राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंधन संस्थान (मैनेज), राजेंद्रनगर, हैदराबाद, तेलंगाना, भारत में मैनेज फेलो हैं।(soiradipta@hotmail।com)

सरवनन राज, राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंधन संस्थान (मैनेज), राजेंद्रनगर, हैदराबाद, तेलंगाना, भारत में निदेशक (कृषि विस्तार) हैं। (saravananraj@hotmail।com)

शोध रिपोर्ट, एक्सटेंशन एजुकेशन के पोस्ट ग्रेजुएट छात्रों हेतु मैनेज इंटर्नशिप कार्यक्रम के अंतर्गत सुश्री सतरूपा मोदक द्वारा किए गए शोध पर आधारित है।

'कृषि विस्तार और परामर्श सेवाओं के भीतर लिंग और पोषण के एकीकरण' पर पूरी रिपोर्ट www।manage।gov।in पर उपलब्ध है।

खंण्डन: दस्तावेज़ में व्यक्त विचार, शोध के आधार पर लेखकों के हैं तथा जरूरी नहीं है कि ये मैनेज या अध्ययन के दौरान पदाधिकारियों के साथ चर्चा पर आधारित हों।

सही उद्धरण: सतरूपा मोदक, सुचिरदीप्त भट्टाचार्जी और सरवनन राज। (2018)। कृषि विस्तार और परामर्श सेवाओं के भीतर लिंग और पोषण के एकीकरण, शोध रिपोर्ट ब्रीफ 2, मैनेज- कृषि विस्तार नवाचार केंद्र, रिफॉर्म एवं एग्रीप्रेन्योरशिप, राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंधन संस्थान (मैनेज), हैदराबाद, भारत।

राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंधन संस्थान (मैनेज)
(कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार का संगठन)
राजेंद्रनगर, हैदराबाद - 500 030,
तेलंगाना राज्य, भारत www।manage।gov।in